प्रश्न ४—सिन्धु घाटी की सभ्यता और वैदिक सभ्यता के अन्तर समझाते हुए सिन्धु घाटी की सभ्यता के योगदान का विवेचन कीजिये

जिस प्रकार दो देशों की भौगोलिक स्थिति में अन्तर होता है, दो मनुष्यो स्वभाव और आचार-विचार में अन्तर होता है: उसी प्रकार [illegible]

ौर वैदिक आर्यों की सभ्यता में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न । सुविधा की दृष्टि से इन असमानताओं का अध्ययन निम्नलिखित शीर्षकों के न्तर्गत किया जा सकता है :—

१) मौलिक अन्तर

सिन्धु घाटी की सभ्यता नगर-सभ्यता थी और आर्य सभ्यता ख्यतः ग्राम-सभ्यता थी । सिन्धु घाटी के निवासियों को नागरिक जीवन प्रिय ा और वे इंटों से बने पक्के मकानों में रहते थे, किन्तु वैदिक सभ्यता के लोग कच्चे कानों में रहते थे । खुदाई से इस सभ्यता के मोहनजोदड़ो, हरप्पा और लोथल ामक विशाल नगर प्राप्त हुये हैं । गार्डन चाइल्ड का अनुमान है कि जिस प्रकार ाजकल नगरों के कार्य-संचालन के लिए म्युनिसिपल संस्थायें होती हैं उसी प्रकार ्न्धु के नगरों में भी वह संस्था रही होगी ।

२) धार्मिक अन्तर

सिन्धु घाटी के लोग मूर्तियों की पूजा करते थे किन्तु आर्य लोग प्रतिमाओं ो पूजा नहीं करते थे। आर्यों का देव-मण्डल विशाल था । सिन्धु घाटी के ोग मातृदेवी की उपासना करते थे किन्तु आर्य लोग मातृ देवी की उपासना नहीं रते थे । यद्यपि आर्यों के यहां ऊषा देवी की पूजा प्रचलित थी तथापि इसका उतना हत्व नहीं था जितना की सिन्धु घाटी में मातृ देवी का महत्व था । सिन्धु घाटी ोग पशुपति की पूजा करते थे किन्तु आर्य इनकी पूजा नहीं करते थे । सिन्धु घाटी लोग मृतक के शरीर को गाड़ देते थे किन्तु आर्य लोग मृतक शरीर को लाते थे । आर्य लोग गाय को माता के रूप में स्वीकार कर पूजा करते किन्तु सिन्धु घाटी के लोग बैल की उपासना करते थे । आर्यों के धार्मिक ीवन में यज्ञ का प्रमुख स्थान था किन्तु सिन्धु घाटी में उत्खनन द्वारा प्राप्त सामग्रियों ऐसी कोई वस्तु नहीं मिली है जिससे यह पता लगे कि वहाँ के निवासी यज्ञ करते थे ।

३) सामाजिक जीवन का अन्तर

सिन्धु घाटी के निवासी भोजन में मछली का प्रयोग करते थे किन्तु ार्य लोग मछली का प्रयोग नहीं करते थे, यद्यपि वे माँसाहारी थे । आर्य ोग सोमरस का प्रयोग करते थे और चावल खाते थे । सिन्धु घाटी के लोग भोजन में जूर का प्रयोग करते थे । सिन्धु घाटी के लोग शान्ति-प्रिय थे । किन्तु आर्य ोग युद्ध-प्रिय थे । सिन्धु घाटी के निवासियों और आर्यों दोनों का ही जीवन ल्लासपूर्ण था । सिन्धु घाटी के लोगों का आर्थिक जीवन भी अधिक उन्नतिशील ौर दृढ़ था ।

४) धातु और पशु ज्ञान का अन्तर

आर्य लोग लोहे का प्रयोग जानते थे और इनके हथियार इसी धातु के बनते जबकि सिन्धु घाटी के लोगों को लोहे का ज्ञान नहीं था । वैदिक सभ्यता में घोड़े ा स्थान महत्वपूर्ण था जबकि सिन्धु घाटी के निवासी इस पशु से पूर्णतः अनभिज्ञ । आर्यों के हथियार तीखे और पैने थे जबकि सिन्धु घाटी के लोगों के हथियार ऐसे थे । आर्यों ने विकसित हथियार और घोड़ों के कारण ही सिन्धु घाटी के लोगों ो पराजित किया था ।

निम्नलिखित तथ्य के द्वारा दोनों सभ्यताओं के अन्तर को समझाया ज सकता है :—

तुलना एवं अन्तर

सिन्धु सभ्यता	वैदिक सभ्यता
(१) यह नगर सभ्यता थी।	(१) यह ग्राम की सभ्यता थी।
(२) यहाँ के लोग लोहे से अपरिचित थे।	(२) आर्य लोग लोहे के पैने और नुकीले हथियार बनाना जानते थे।
(३) यहाँ के देवमण्डल में मातृ देवी एवं शिव को प्रमुख स्थान प्राप्त था। ये मूर्ति-पूजक थे।	(३) आर्य लोग ऊषा को देवी मानते थे। किन्तु इसको प्रमुख स्थान प्राप्त नहीं था। प्रकृति की विभिन्न शक्तियों की उपासना करते थे। मूर्ति पूजा का प्रचलन नहीं था।
(४) सिन्धु घाटी के लोग शांतिप्रिय थे।	(४) आर्यों का जीवन अधिक युद्धमय था।
(५) उद्योग धन्धों और व्यापार में सिन्धु घाटी के लोगों ने ज्यादा उन्नति की थी। इनकी कला उच्चकोटि की थी।	(५) विचार और अनुभूति के क्षेत्र में आर्यों ने अधिक उन्नति की थी।
(६) सिन्धु घाटी के लोग भोजन में मछली और खजूर का प्रयोग करते थे।	(६) आर्य लोग मांसाहारी तो थे किन्तु मछली नहीं खाते थे।

सिन्धु सभ्यता की देन

आर्य लोग सिन्धु घाटी की सभ्यता को पूर्ण रूप से नष्ट कर देना चाहते थे किन्तु इस प्रयत्न में वे असफल रहे। उन्होंने सिन्धु घाटी के कुछ तत्वों को ग्रहण भी किया जो कि बाद में भारत की सभ्यता में मिल गये। डा० राधा कुमुद मुकर्जी ने अपनी पुस्तक "हिन्दू सभ्यता" में लिखा है कि आर्य लोग सिन्धु घाटी की सभ्यता से परिचित थे तथा ऋग्वेद में जिस यथार्थ सभ्यता का उल्लेख है वह सिन्धु घाटी की सभ्यता प्रतीत होती है। ऋग्वेद में अनार्यों की छोटी नाक वाले (अनास) अजनबी भाषा बोलने वाला (मृध्रवाक) तथा वैदिक अनुष्ठान, देवताओं, यज्ञों तथा व्रतों को मानने वाला "अदेवयु, अर्यज्वाम" बतलाया है। अनार्यों को "शिशिन देवः" अर्थात् लिङ्ग पूजक भी कहा गया है। सिन्धु घाटी के लोग निश्चित ही लिङ्ग तथा योनि की पूजा करते थे। ऋग्वेद में अनार्य सभ्यता के जिन मौलिक स्वरूपों के विवरण प्राप्त होते हैं वे सिन्धु घाटी की सभ्यता से काफी साम्य रखते हैं। (१) आजकल भी पशुपति शिव की पूजा की जाती है। सिन्धु घाटी के प्रचलित धर्म बृक्ष-पूजा तथा योग पद्धति अभी तक प्रचलित है' (२) विद्वानों का कथन है कि ब्राह्मी लिपि भी सिन्धु घाटी से निकली है। भारतीय कला का प्रारम्भ सिन्धु घाटी से मानना चाहिए, आर्यों की सभ्यता से नहीं। (३) इसी प्रकार मुद्रा निर्माण में भी आर्यों का कोई प्रभाव नहीं है। (४) डा० राधाकृष्णन का विचार है कि अथर्ववेद में जादू-टोना इत्यादि तत्वों का जो प्राधान्य है उस पर सिन्धु घाटी की सभ्यता का ही प्रभाव है।